

वाणीपुस्तकमाला—पुष्प १६ वाँ ।

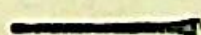
॥ श्रीः ॥

तीर्थ और देवपूजन-रहस्य ।

(प्रश्नोत्तरी)



प्रकाशक—
आर्यमहिलाहितकारिणी महापरिषद्,
काशी ।



मुद्रक—मा० रा० काले,
श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस सिटी ।

प्रथम संस्करण] १९३५ [मूल्य ~)

शास्त्रीय-ग्रन्थ-प्रकाशन ।



श्रीभारतधर्ममहामण्डलका विचार है कि, सनातन-धर्मके मूलभूत चारों वेदों, उनकी शाखाओं, उपवेदों, उपनिषदों, दर्शनों, तन्त्रों, स्मृतियों, मौलिक तथा आजतक अप्रकाशित शास्त्रीय ग्रन्थों और पुराणोंके शुद्ध संस्करण, वैज्ञानिक टिप्पणियों, भाष्यों तथा हिन्दी अनुवाद सहित, क्रमशः प्रकाशित कर राष्ट्रभाषा हिन्दीकी पुष्टि करते हुए स्वधर्मकी सेवा की जाय । तदनुसार महामण्डलसे सम्बन्ध-युक्त निम्नलिखित ग्रन्थमालाएँ प्रकाशित हो रही हैं:—

१—वाणीपुस्तकमाला । (हिन्दी)
२—आर्यमहिलापुराणमाला । (हिन्दी)
३—सूर्योदयपुस्तकमाला (संस्कृत)
४—निगमागमग्रन्थमाला । (संस्कृत और हिन्दी)
५—धर्मप्रचारकपुस्तकमाला (बँगला)
६—महामण्डलसीरीज़ (अंग्रेजी)
७—महामण्डलपुस्तिकामाला (हिन्दी और अंग्रेजी)

इन मालाओंकी सब पुस्तकें स्थायी ग्राहकोंको पौने मूल्यमें दी जाती हैं ।



ॐ तत्सत् ।

निवेदन ।

श्रीभारतधर्ममहामण्डलके संचालक पूज्यपाद श्री १०८ स्वामीजी महाराज विन्ध्याचल क्षेत्रमें विराजते थे। उस समय आजकलके तीर्थोंकी परिस्थिति, तीर्थों—मन्दिरों और पण्डों-पुजारियोंकी अवस्था आदिको देख कर मैंने उनसे कुछ शंकाएँ कीं, तो मेरी प्रत्येक शङ्काका उन्होंने ऐसा समाधान किया कि, फिर सन्देहको अवकाश ही नहीं रह गया। वे ही प्रश्नोत्तर मैंने लिख लिये और उन्हींकी आज्ञासे यह प्रश्नोत्तरी प्रकाशित की जा रही है। मेरा प्रश्न सुनते ही श्रीजी तुरन्त ऐसा उत्तर देते थे कि, मानो वह विषय उनका घोखा हुआ है। इसका कारण पूछनेपर श्रीजीने हँसकर कहा,—इसमें मैं तो एक निमित्त हूँ, क्योंकि मैं अनुभव करता हूँ कि, ऐसे शङ्का-समाधान और शास्त्र-प्रणयनकी मुझमें कुछ भी योग्यता नहीं है। ऐसे विषयोंमें जब मैं स्मरणगामी, करुणावरुणालय, जगद्गुरु, भगवान् श्रीदत्तात्रेय प्रभुके शरणापन्न होता

हूँ, तब वे ही स्वयं सब शंकाओंका समाधान किया करते हैं। संसारमें ज्ञानप्रकाशनके वे ही मूल कारण हैं और उनकी कृपाका पार नहीं है। अन्तः श्रीभगवान् दत्तात्रेयकी कृपासे ही जब यह प्रश्नोत्तरी निर्मित हुई है, तब उन्हींके चरणारविन्दोंमें इसे अर्पण करते हुए मुझे परम सन्तोष और आनन्द हो रहा है तथा मैं कृतकृत्य हो रहा हूँ। यह प्रश्नोत्तरी मैंने आर्यमहिला-हितकारिणी महापरिषद्की मुखपत्रिका 'आर्यमहिला' में प्रकाशित की थी। फिर सोचा कि, भारतके कोने-कोनेमें प्रत्येक देवमन्दिरके पुजारी, प्रत्येक तीर्थके पुरोहित-पंडे और प्रत्येक तीर्थयात्रीके पास यह पहुँचे; जिससे सब सनातनधर्मी इससे लाभ उठावें। तद्नुसार यह वाणीपुस्तकमालाके द्वारा प्रकाशित हो रही है। यदि दाताओंसे सहायता मिलेगी, तो भारतवर्षकी सब भाषाओंमें भी यह प्रकाशित की जायगी। इसका स्वत्वाधिकार वाणीपुस्तकमालाकी प्रकाशिका को अर्पित है। श्रीभगवान्की यदि कृपा होगी, तो इसी प्रकारके अभिनव प्रश्नोत्तर प्रतिमास प्रकाशित करनेका विचार है।

निवेदक—

गोविन्दशास्त्री दुगवेकर।

तीर्थ और देवपूजन-रहस्य।



(श्रीभारतधर्ममहामण्डलके एक महात्मा द्वारा
शंका-समाधान)



१. प्रश्न—तीर्थ किसको कहते हैं ?

उत्तर—दैवीजगत्‌से सम्बन्धयुक्त जो देश अथवा स्थान हो, उसे तीर्थ कहते हैं।

२. प्र०—तीर्थ और पीठमें भेद क्या है ?

उ०—तीर्थ और पीठमें कोई भेद नहीं है। जैसे सनातनधर्मी मूर्तिकी पूजा नहीं करते, किन्तु मूर्ति, स्थण्डिल, पट आदिमें पीठ स्थापन करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा कर उस पीठमें सर्वव्यापक भगवत्-शक्तिकी उपासना करते हैं, और वह वस्तु दिव्य पीठ बनकर दैवीजगत्‌से सम्बन्धयुक्त हो

जाती है, वैसे ही जिन जिन पवित्र स्थानोंमें दैवी-पीठ रहता है, उन दिव्य स्थानोंको सनातनधर्मी तीर्थ कहते हैं ।

३. प्र०—दैवीजगत् किसको कहते हैं ?

उ०—हमारे इस मृत्युलोक भारतवर्षके अतिरिक्त हमारे ब्रह्माण्डका जितना अंश है, वह सब दैवी जगत् है । हमारा ब्रह्माण्ड चौदह बड़े बड़े लोकोंमें विभक्त है । नीचेके सात लोक अतल, वितल आदि बिलस्वर्ग कहाते हैं । उनमें असुर लोग वास करते हैं । असुरगण भी एक प्रकारके देवता हैं । ऊपरके भूः, भुवः, स्वः आदि सात लोकोंमें नाना श्रेणीके देवता वास करते हैं । देवतागण ब्रह्माण्डकी रक्षा करते हैं, असुरोंसे लड़कर सृष्टिमें सामञ्जस्य बनाये रखते हैं और हमारे कर्मोंके अनुसार कर्म-फलभोगरूपी नाना प्रकारके सुखदुःखोंकी सामग्री पहुँचाया करते हैं । मनुष्यके मरनेपर उसके जीवात्माको वे नाना लोकोंमें नरकभोग और स्वर्ग-भोगके लिये लेजाते हैं । जब मनुष्योंका पुनः इस मृत्युलोकमें जन्म होता है, तब देवतागण ही माताके गर्भमें उस जीवको पहुँचा दिया करते हैं । हमारा

मृत्युलोक हमारे इस ब्रह्माण्डका ८८७६ वाँ अंश है, बाकी सब देवलोक है और यही दैवीजगत् है।

४. प्र०—दैवीजगत्से सम्बन्ध होकर पीठ कैसे बनता है?

उ०—बहुतसे ऐसे देश हैं, जिनमें पीठ अपने आप ही बन जाता है। बहुतसे स्थल ऐसे हैं, जहाँ पीठ स्थापन करना पड़ता है। शास्त्रोंमें ऐसा पाया जाता है कि, पीठके अनेक प्रकार हैं। यथाः— (१) माताका शरीर, (२) सती स्त्रियोंका शरीर, (३) रमण-अवस्थामें स्त्रीशरीर, (४) जल, (५) अग्नि, (६) शालग्राम शिला, (७) नर्मदेश्वर लिङ्ग, (८) अपराजिता आदि यन्त्र-पुष्प, जिनमें नित्य पीठ बना रहता है, (९) शरीरमें नाभिका स्थान, (१०) शरीरमें हृदयका स्थान, (११) शरीरमें मूर्द्धाका अर्थात् दोनों नेत्रोंके बीचका स्थान, (१२) कुमारीका शरीर, (१३) बटुकका शरीर, (१४) तुलसीवृक्ष, (१५) अश्वत्थवृक्ष और (१६) दिव्यदेश, यथाः—तीर्थ और देवमन्दिर आदि। इन सब प्रकारके पीठोंके साथ दैवीजगत्का सम्बन्ध स्वतः रहता है या बन

जाता है। इनकी सहायतासे भगवदाराधना करनेसे वह क्रिया दैवीजगत्‌में सुगमतासे पहुँचती है, यही शास्त्रका सिद्धान्त है।

५. प्र०—पीठ क्या है और कैसे बनता है ?

उ०—जीवशरीरको पिण्ड कहते हैं। पिण्ड तीन प्रकारका होता है। यथा,—उद्भिज्ज, स्वेदज, अण्डज और जरायुज जीवोंका पिण्ड सहजपिण्ड कहाता है। मनुष्यका पिण्ड मानवपिण्ड कहाता है और भूत, प्रेत, असुर, देवता, नित्यऋषि, नित्य-पितर आदि सब दैवजगत्‌के निवासियोंका पिण्ड देवपिण्ड कहाता है। इन सब पिण्डोंमें पाँच कोष होते हैं। आत्मा इन पाँचों कोषोंसे आवृत रहता है। उन कोषोंके नाम ये हैं:—अन्नमय कोष, प्राण-मय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष और आनन्दमय कोष। इन पाँचों कोषोंमेंसे अन्नमय कोष सबका बदलता रहता है। अन्नमय कोषके बदलनेको मृत्यु कहते हैं। जब जीवकी मृत्यु होती है, तब अन्नमय कोष शव बनकर यहीं पड़ा रहता है, गलकर मिट्टीमें मिल जाता है और उसका प्राणमय कोष अन्य तीन कोषोंको साथ लेकर

दूसरे लोकोंमें चला जाता है। इसी कारण मृत्यु-दशामें लोग कहते हैं कि, इसके प्राण निकल गये। प्राणमय कोष ही स्थूलजगत् और दैवीजगत्में सम्बन्ध स्थापन करता है। अतः समष्टिप्राणमयकोषमें यदि किसी उपायसे ऐसा स्थान बना दिया जाय, जहाँ देवतागण आनन्द और सुगमतासे ठहर सकें, तो उस स्थानको पीठ कहते हैं। प्राणमयकोषमें दो शक्तियाँ हैं, एक आकर्षणशक्ति और दूसरी विकर्षण-शक्ति। एक खींचती और दूसरी धक्का देती है। जब इन दोनों शक्तियोंका एक केन्द्रमें समन्वय होता है, तो उस केन्द्रमें प्राणका एक आवर्त बन जाता है और यही आवर्त पीठ कहाता है। यह पीठ जितना पवित्र होता है, उतना ही उच्चकोटिके देवताओंसे उसका सम्बन्ध स्थापित होता है। जब यह पीठ बलवान् और पवित्र हो जाता है, तो उस पीठका रक्षक एक स्वतन्त्र देवता वहाँ सदा विराज-मान रहता है। इस कारण स्थायी और पुनीत तीर्थोंमें, प्राचीन देवमन्दिरोंमें, पुनीत नद-नदियोंमें, दिव्य सरोवर आदिमें उनके अधिदैवरूपसे एक एक देवता अथवा देवी सम्बन्धयुक्त होती है। जैसीः—

गङ्गानदीमें गङ्गादेवी, तुलसीवृक्षमें तुलसीदेवी, काशीक्षेत्रमें कालभैरव इत्यादि। बहुतसे स्थानोंमें पीठ नित्यरूपसे बना रहता है।

६. प्र०—नित्यरूपसे पीठ कैसे बना रहता है और नैमित्तिक पीठ कैसे उत्पन्न होता है ?

उ०—जब माता मातृभावसे युक्त होकर पवित्र रहती है, तब अपने आपही उसका अन्तःकरण दैवीजगत्से सम्बन्धयुक्त हो जाता है। जो नित्यपीठ है, उसमें सदा एकरसरूपसे दैवी-सम्बन्ध बना रहता है। जैसेः—काशी आदि बड़े तीर्थ, गङ्गा आदि नदियाँ। कुछ देश ऐसे हैं, जैसेः—शालग्राम शिला, नर्मदेश्वर, यन्त्रपुष्प आदि, इनमें मनुष्यकी उपासनाबुद्धि होते ही अपने आप पीठ बन जाता है। देव-विग्रह, जो प्रतिष्ठित किया जाता है, उसमें तब पीठ बनता है, जब प्राणप्रतिष्ठा आदि क्रियाओंसे पीठ उत्पन्न किया जाता है। इस प्रकार नित्यपीठ और नैमित्तिकपीठका रहस्य प्रकट होता है। यह दिग्दर्शन मात्र है।

७. प्र०—तीर्थ कितने प्रकारके हैं ?

उ०—नित्यतीर्थके कई भेद हैं। भारतवर्षमें

पुष्करादि सरोवर, गङ्गा आदि नदियाँ और काशी आदि क्षेत्र ऐसे तीर्थ हैं, जिनका स्थान सूक्ष्मदैवीलोकमें भी है। अर्थात् सूक्ष्म दैवीलोकमें पुष्कर, गङ्गा, काशी आदिके मूलस्थान हैं और उनकी प्रतिकृति हमारे भारतद्वीपमें है। अन्य प्रकारके नित्यतीर्थ भी शास्त्रोंमें माने गये हैं। जैसेः—मातृतीर्थ अर्थात् माता जब मातृभावसे स्नेहयुक्त होकर तन्मय होती है, तब वह नित्यतीर्थरूप बन जाती है। इसी प्रकार सती स्त्री जब पतितन्मयताको प्राप्त होती है, तब उस पतितन्मयतारूपी योगसे वह नित्यतीर्थ बन जाती है और इसी प्रकार शालग्राम, बाणशिला, अपराजिता आदि यन्त्रपुष्प विना प्राणप्रतिष्ठा किये सामने रखकर भक्तकी उपासनाबुद्धि होते ही नित्यतीर्थ वन जाते हैं। गङ्गाजलकी महिमा भी ऐसी ही है। इन नित्यतीर्थोंमें माता, शालग्राम शिला आदि केवल उपासनाके उपयोगी तीर्थ हो सकते हैं; परन्तु सर्वफलप्रद पीठ और तीर्थ, काशी आदि क्षेत्र, गङ्गा आदि नदियाँ और पुष्कर आदि सरोवर ही माने गये हैं।

नैमित्तिक तीर्थके भेद अनेक हैं। जिन तीर्थोंका

मूलस्थान दैवीजगत्में न हो और देवताओंकी कृपासे इस मृत्युलोकमें जो तीर्थ बन गये हों, वे नैमित्तिक तीर्थ हैं। जैसे—नैमिषारण्य जैसे अरण्य, वृन्दावन जैसे वन, सेतुबन्ध रामेश्वर, द्वारका, बदरीनाथ और जगन्नाथ जैसे चार धाम, विन्ध्याचल आदि क्षेत्र, ये सब प्रधान नैमित्तिक तीर्थोंके उदाहरण हैं। नैमित्तिक तीर्थोंका दूसरा भेद यह है कि, जहाँ कोई सिद्धविग्रह अर्थात् देवताकी जागृत मूर्ति, पहुँची हो, जैसी नाथद्वारामें श्रीनाथजीकी मूर्ति, अथवा जहाँ किसी सिद्ध महात्माने पीठशक्ति उत्पन्न की हो, जैसे वशिष्ठाश्रम आदि, वे भी नैमित्तिक तीर्थ कहाते हैं। जल अभिमन्त्रित करनेपर, अग्निकी प्रतिष्ठा करनेपर, अपने शरीरकी नाभि, हृदय और मूर्धामें योगयुक्त मनके ले जानेपर, कुमारी और बटुमें पूजाबुद्धि होनेपर और स्थण्डिल, पट, मूर्ति आदि दिव्यदेश मन्त्रादि द्वारा प्रतिष्ठित होनेपर नित्यपीठ बन जाते हैं। परन्तु शास्त्रोक्त नैमित्तिक तीर्थोंकी महिमा कुछ और ही है। उनकी महिमा वेदों, पुराणों और तन्त्रादिमें वर्णित है। जो लोग दैवीजगत्को मानते हैं और उसके

महत्त्वको समझते हैं, उनको इस विषयमें सन्देह हो ही नहीं सकता।

८. प्र०—क्या तीर्थ और पीठका महत्त्व घटता बढ़ता भी है ?

उ०—तीर्थों अथवा पीठोंमें एक कलासे लेकर सोलह कलाओंतक दैवीकलाओंका विकास होता है। दैवीकलाओंके विकास और सङ्कोचके अनुसार तीर्थों और पीठोंकी महिमा घटती और बढ़ती भी रहती है। उपासक नर-नारियोंकी धर्म-बुद्धि, उपासनाबुद्धि और श्रद्धाके तारतम्यसे तीर्थों और पीठों-पर ऐसा प्रभाव पड़ता रहता है। इसका प्रधान कारण यह है कि, मनुष्यमें पञ्चकोष जैसे विद्यमान हैं, वैसे देवताओंमें भी हैं। जैसे एक घरमें यदि तानपूरा, सितार, तबला, मृदङ्ग, बीन आदि यन्त्र एक स्वरमें मिलाकर रख दिये जायँ, तो किसी एकके बजानेसे सभी यन्त्र जीवितकी तरह स्वर देने लगते हैं, ठीक वैसे ही मनुष्य-शरीरके पञ्चकोष यदि श्रद्धा, धर्मबुद्धि और उपासनाबुद्धिसे देवताओंके पञ्चकोषोंके साथ एक स्वरमें मिले रहें, तो परस्पर सम्बन्ध बना रहेगा और

उपासकोंकी श्रद्धा, धर्मबुद्धि और उपासनाबुद्धिकी कमीसे सभी स्वर बेसुरे होकर उनका सम्बन्ध कम अथवा विच्छिन्न हो जायगा। इसी विज्ञानके अनुसार देवमन्दिरों और तीर्थोंकी दैवीकलाएँ बढ़ सकतीं और घट भी सकती हैं।

९. प्र०—तीर्थों और देवमन्दिरोंकी दैवी-कलाओंके घटने-बढ़नेके कारण क्या हैं ?

उ०—इसके आठ कारण हैं:—(१) दैवीजगत्पर विश्वास, (२) पीठपर श्रद्धा, (३) मन्त्रशुद्धि, (४) द्रव्यशुद्धि, (५) पुजारीकी योग्यता, (६) उपासकों-का अधिकार, (७) आचार और (८) विचार।

(१) पूर्वकथित दैवीजगत् और उसके पदधारी भगवान् ब्रह्मा, भगवान् विष्णु, भगवान् महेश तथा इन्द्र, यम, वरुण आदि अन्य देवताओं पर तथा दैवीजगत्के विस्तृत साम्राज्य और उसकी महान् शक्तिपर स्थिर विश्वास रखना ही दैवीजगत्पर विश्वास कहाता है। (२) पीठ कैसे उत्पन्न होता है, इसको जानकर तीर्थों और देवमन्दिरोंके पीठाभिमानी देवताओंपर श्रद्धा रखना ही पीठपर श्रद्धा कहाती है। (३) वेदोक्त, पुराणोक्त अथवा तन्त्रोक्त मन्त्रोंका विनियोग ठीक-

ठीक जानकर उनका शुद्ध उच्चारण और शुद्ध प्रयोग होनेसे ही मन्त्रशुद्धि होती है। (४) पूजाके उपचारों और पूजासम्बन्धी सब द्रव्योंका आसन-शुद्धि, दिक्‌शुद्धि आदि शुद्धिपूर्वक विनियोग और अर्पण शास्त्रोक्त रीतिसे होनेसे द्रव्यशुद्धि होती है। (५) जो आठ विषय यहाँ कहे गये हैं, उन आठ विषयोंका अच्छी तरह ज्ञान होनेपर देव-मन्दिरोंके पुजारी और तीर्थोंके पण्डे अपनी योग्यता-को प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही साथ उनको सदाचारी, ब्रह्मकर्मनिष्ठ, देवताओंमें भक्तिमान्, होकर पींठोंमें देवताओंकी सदा उपस्थितिका अनुभव और शास्त्रोंका अनुशीलन करना चाहिये। ऐसा होनेपर समझा जायगा कि, देवपुजारी और तीर्थके पण्डे धर्मकार्यकी जिम्मेवारीकी योग्यता रखते हैं। (६) जो उपासक, दर्शक और यात्री देवमन्दिरोंमें दर्शनके लिये अथवा तीर्थोंमें यात्राके लिये जावें, उनको कमसे कम उस समयके लिये इन्द्रियसंयमी, दैवीजगत्‌पर श्रद्धालु, भगवद्भक्तियुक्त, सत्यनिष्ठ, अक्रोधी, विषय-रागरहित, साधुदर्शनाभिलाषी और देवों तथा तीर्थोंके दर्शनसे कृतकृत्यताका अनुभव करनेवाले

होना चाहिये । इसीसे उपासकोंका अधिकार निर्णीत होता है । (७) चाहे दर्शकवृन्द हों, या पण्डे अथवा पुजारी हों, सबको आचारवान् होना चाहिये । देवमन्दिरोंके पुजारियों और तीर्थके पण्डे-पुरोहितों-को जिस देवमन्दिररूपी पीठ अथवा तीर्थरूपी पीठके दर्शन और पूजनकी जो मर्यादा सदासे चली आती हो, उसीके अनुसार शुद्धाशुद्धविवेक रखकर ठीक-ठीक नियम पालन करना चाहिये । किसी देवमन्दिर अथवा तीर्थमें केवल ब्राह्मण ही जा सकते हैं, किसीमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और सत् शूद्र जा सकते हैं और असत् शूद्र बाहरसे दर्शन करते हैं और कहीं असत् शूद्र भी जा सकते हैं । ये सब आचार यथावत् पालन होने चाहिये और जहाँ जिस बातकी प्रथा नहीं है, वहाँ वह बात नहीं होनी चाहिये । इन सब बातोंसे आचारपालन होता है । (८) वेद, स्मृति, पुराण और तन्त्रादि शास्त्रके पाठ, श्रवण और मननसे विचारका सम्बन्ध है । ये आठ बातें जब ठीक-ठीक होती रहती हैं, तो पीठकी कलाएँ बढ़ती रहती हैं और जब ठीक-ठीक नहीं रहतीं, तो पीठकी कलाएँ घटती रहती हैं ।

१०. प्र०—जो देवमन्दिरोंके पुजारी अथवा तीर्थपुरोहित पण्डे उक्त आठों विषयोंको न जानकर अथवा इनके पालनका विचार न रखकर निरङ्कुश होते हैं, उनकी क्या गति होती है ?

उ०—जो देवमन्दिरोंके पुजारी अथवा तीर्थ-पुरोहित पण्डे अपने इन कर्तव्योंको न समझकर निरङ्कुश होते हैं और मनमाने काम कर देवापराध करते हैं, शास्त्रोंमें स्पष्ट लिखा है कि, उनको वृक्ष आदि उद्भिज्ज योनि, कृमि कीट आदि स्वेदज योनि, पक्षी सर्प आदि अण्डज योनि और श्वान शूकर आदि जरायुज योनिमें दण्डभोगके लिये जन्म लेना पड़ता है और उन्हें प्रेतलोक और नरकलोककी यातनाएँ अलग भोगनी पड़ती हैं। किसी प्रतिष्ठित अथवा सम्माननीय व्यक्तिका अपमान करनेसे कदा-चित् मनुष्य बच सकता है, परन्तु महान् शक्तिशाली देवताओंकी अवज्ञा करके उनकी सेवा-पूजाके सम्बन्धसे, देवपूजाके सम्बन्धसे, देवापराधी होनेपर उस पापसे कदापि निष्कृति नहीं हो सकती। बिना पढ़े, बिना सीखे, बिना जाने देवपूजा और तीर्थपुरोहितका कार्य लेकर

भक्तों अथवा दर्शकोंको ठगनेसे पूर्वकथित चतुर्विध भूतसङ्घकी योनियोंमें दण्डके लिये भटकना पड़ता है। शास्त्रोंमें ऐसी ही भूरि-भूरि आज्ञाएँ पायी जाती हैं। इस कारण जहाँतक सम्भव हो, तीर्थपुरोहितों और देवपुजारियोंको श्रद्धापूर्वक इन गुणोंका अभ्यास यथाशक्ति करना चाहिये। नहीं तो उनका पतन अवश्य होता है। दूसरी ओर जो पण्डे-पुजारी देवमूर्तियों और तीर्थादि पीठोंका पूजन, अर्चन आदि भक्ति, श्रद्धा, परलोकज्ञान और कर्तव्यनिष्ठासे शून्य होकर केवल व्यवसायबुद्धिसे करते हैं, वे जन्मान्तरमें निःसन्देह अन्त्यजत्वको प्राप्त करते हैं। इस कारण जहाँतक सम्भव हो, व्यवसाय-बुद्धिको छोड़कर अपना धर्म और कर्त्तव्य समझकर इन पुण्यकार्योंको करना चाहिये। अन्यथा बहुत ही दुःख पानेकी सम्भावना है।

११. प्र०—पीठका रहस्य समझनेके लिये क्या कोई स्थूल प्रमाण है ?

उ०—यद्यपि पीठरहस्य समझना अति सूक्ष्म बुद्धिका कार्य है, तथापि उसके स्थूल प्रमाण भी दिये जा सकते हैं। आजकलके पश्चिमी साइन्सके ज्ञाता

विद्वानोंने भूत-प्रेतोंसे सम्बन्ध स्थापन करनेके लिये पीठ बनानेकी एक सुगम शैली निकाली है। तीन पायेकी एक तिपाईपर कमसे कम दो व्यक्ति अपने-अपने हाथोंकी अँगुलियाँ परस्पर जोड़कर रक्खें और सब एक साथ किसी मृतात्माका ध्यान करें, तो वह टेबल हिलकर सजीवकी तरह काम करती और प्रश्नोंका उत्तर देने लगती है। यह मन्त्ररहित अगर्भ पीठका ज्वलन्त दृष्टान्त है। यह अगर्भ पीठ होनेसे इसमें देवता तो नहीं आते, परन्तु प्रेतादिक छोटी देवयोनियोंका इससे तुरन्त सम्बन्ध स्थापित हो जाता है और टेबल अपने आप हिलने लगती और बुद्धिमान्की तरह प्रश्नोंके उत्तर देने लगती है। इसका प्रत्यक्ष रहस्य यह है कि, पीठ बनानेवालोंके हाथोंकी अंगुलियोंके द्वारा उनके प्राणमय कोषकी आकर्षण और विकर्षण शक्तियाँ मिलकर उनके समन्वयसे आवर्त बनकर पीठ बन जाता है। हर एक मनुष्य इसको करके देख सकता है और पीठ-विज्ञानपर श्रद्धा स्थापन कर सकता है।

१२. प्र०—क्या मन्त्रविज्ञानके सम्बन्धमें भी कोई प्रत्यक्ष प्रमाण इसी प्रकारका दिया जा सकता है?

३०-दैवीजगत्तक जो शब्द सुगमतासे पहुँच सके, उसको मन्त्र कहते हैं। सिद्धमन्त्र वे कहाते हैं, जो गुरुपरम्परा और सम्प्रदायपरम्परासे अनेक कालसे काममें आते रहे हों। मन्त्रकी व्यापकता समझनेके लिये आजकलके रेडियो यन्त्रकी क्रिया समझने योग्य है। चाहे विलायतके लन्दन नगरमें अथवा सुदूर बम्बई नगरमें कोई गाना या वक्तृता होती हो, तो काशीके किसी भी घरमें रेडियो यन्त्र चलाकर रखनेसे वह गाना या वक्तृता काशीके उस घरमें सुनायी देती है। सर्वव्यापक आकाशके द्वारा वह शब्द तुरन्त उस घरके आकाशमें प्रकट हो जाता है। आकाशकी दूरी, समुद्र, नदी, पर्वत, वृक्षादिकी रोकटोक उस शब्दमें नहीं हो सकती। जब लौकिक शब्द लौकिक यन्त्रके द्वारा तुरन्त हजारों कोसोंकी दूरीपर पहुँच जाते हैं, तो दैवी शब्द (मन्त्र) देवलोकमें पहुँच जायँगे, इसमें सन्देह ही क्या है? आधुनिक साइन्सके द्वारा भी हमारा मन्त्रविज्ञान समझमें आ सकता है। सिद्धमन्त्रोंमें दो ओरसे बड़ी भारी सहायता होती है। एक तो साधकके योगयुक्त अन्तःकरणकी सहायता और

दूसरी देवताओंकी सहायता। ये दोनों सहायताएँ मिलनेसे और पहिले कहे अनुसार पञ्चकोषोंका स्वर मिला रहनेसे तुरन्त मन्त्रशक्ति बेतारके तारकी तरह देवलोकमें पहुँच जाती है।

१३. प्र०—क्या पीठमें पहुँचने और पीठ, तीर्थ और देवदर्शनादि करनेसे प्रायश्चित और पापोद्धार भी हो सकता है?

उ०—जैसे दो मत्त हाथी लड़ते हैं और दोनोंमें जो अशक्त होता है वह टक्कर खाकर भाग जाता है, वैसे छोटे कर्मके धक्केको बड़ा कर्म हटा दे सकता है। प्रसिद्ध तीर्थोंमें और सिद्धदेवमन्दिरोंमें जो दैवीपीठशक्ति सदा बनी रहती है, भक्तियुक्त दर्शक अपनी भक्तिकी अनन्यतासे वहाँकी दैवी-शक्तिकी सहायता सुगमतासे पा सकता है। इस कारण पीठोंकी कृपासे पापका प्रायश्चित हो सकता है और पापका फल हट सकता है। बहुत पीठोंमें ऐसे चमत्कार अब भी होते हैं कि, वहाँ जब भक्त धरना देते हैं, तब उनके रोगोंकी औषधि, पापोंके प्रायश्चित्त-का उपाय, मनकी इच्छापूर्तिका उपाय आदि उनको वहाँकी पीठाभिमानिनी देवताकी कृपासे ज्ञात हो जाता

है। वैद्यनाथ आदि तीर्थोंमें अब भी ऐसे चमत्कार देखनेमें आते हैं। वहाँके पीठाभिमानी देवताकी कृपा-से ऐसी सफलता हो जाती है। तीर्थों और देवमन्दिरों-के पुजारी यदि अब भी सुयोग्य बनें, तो विन्ध्या-चल आदि जैसे शक्तिशाली पीठोंमें ऐसी दैवीशक्ति अब भी उनकी तपस्याद्वारा उत्पन्न हो सकती है।

१४. प्र०—ऋषि, देवता और पितरोंके अधिकार क्या हैं और क्या उनके सम्बन्धसे तीर्थ भी अलग अलग होते हैं ?

उ०—कर्मके चालक और कर्मके फल देनेवाले जो अधिदैव हैं, वे नित्यदेवता कहाते हैं। यथाः—इन्द्र, यम, वरुण आदि। ज्ञानके सञ्चालक जो अधिदैव हैं, वे नित्यऋषि कहाते हैं। यथाः—कश्यप, अत्रि, भरद्वाज आदि और स्थूलशरीरके रक्षक, स्थूलशरीरप्रदाता और स्वास्थ्य तथा वंशरक्षक जो अधिदैव हैं, वे नित्यपितर कहाते हैं। यथाः—अर्यमा, अग्निष्वात्ता आदि। तीर्थोंमें इन तीनों भेदोंके अनुसार कहीं कहीं अलग सम्बन्ध अवश्य रहता है। पितृगयाक्षेत्र, मातृगयाक्षेत्र, पिशाचमोचन तीर्थ आदि पितृप्रधान तीर्थ हैं। नैमिषारण्य,

कपिलाश्रम, वशिष्ठाश्रम आदि ऋषिप्रधान तीर्थ हैं और द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग, चार धाम, सप्त पुरी आदि देवताप्रधान तीर्थ हैं। काशी, बदरिकाश्रम आदि मिश्र तीर्थ हैं, जहाँ तीनोंके पूजनकी व्यवस्था है। इनके अतिरिक्त कुछ अवतारप्रधान तीर्थ हैं। यथाः–प्रभास, वृन्दावन, चित्रकूट आदि।

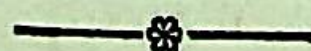
१५. प्र०–क्या देवमन्दिर भी अलग अलग श्रेणीके होते हैं ?

उ०–देवमन्दिररूपी पीठोंके भी कई भेद हैं। यथाः–स्वयम्भु पीठ—द्वादश ज्योतिर्लिङ्गादि। इनमें यदि विग्रहच्छेद हो जाय अर्थात् देवविग्रह हटा दिया जाय, तो पीठकी हानि नहीं होती; जैसा काशी आदिमें हुआ था। स्थापित विग्रहादि—यथाः–रामेश्वर, बदरिकाश्रम, जगन्नाथपुरी आदि। स्थापित विग्रहके भी कई भेद हैं। वे भेद स्थापनकर्ताके अधिकारके अनुसार माने जाते हैं। यथाः–अवतारादि और महर्षियोंके द्वारा जो स्थापित हैं, उनका अधिकार साधारण मनुष्योंद्वारा स्थापित देवपीठोंसे अधिक होता है। जहाँ जहाँ शास्त्रोक्त दैवीपीठ विद्यमान हैं, वहाँके पीठसम्बन्धसे विग्रह स्थापित

करनेसे उनमें दैवीशक्ति तुरन्त आ जाती है।

१६. प्र०—देवमन्दिरोंके पुजारी और तीर्थके पण्डे-पुरोहितोंको योग्य बनानेका उपाय क्या है? यदि वे अयोग्य हों, तो उनके साथ कैसा वर्त्ताव करना चाहिये?

उ०—उनके योग्य बनानेका सहज उपाय यह है कि, पठित, विद्वान्, सदाचारी और तपस्वी व्यक्तियोंका पुरस्कार किया जाय और जो अयोग्य हों, उनका तिरस्कार किया जाय। ऐसा होनेपर सभी योग्य बनने लगेंगे। सम्मान, धन आदिसे उनका पुरस्कार किया जा सकता है और उनको न मानने, सामाजिक दण्ड देने आदिसे तिरस्कार किया जा सकता है। यह तिरस्कार और पुरस्कारकी व्यवस्था मन्दिरोंके प्रबन्धकों, दर्शकों और तीर्थयात्रियोंके हाथ में है। यदि वे चाहें, तो पुजारियों और पण्डोंका स्वयं उपकार करके पुण्य और यश प्राप्त कर दैवी-जगत्‌की कृपा भी प्राप्त कर सकते हैं। उनके ही प्रमादसे पण्डे-पुजारियोंकी अधोगति हुई है, यह उनको दैवीजगत्‌पर विश्वास रखकर सर्वदा स्मरण रखना चाहिये।



१—वाणीपुस्तकमाला।

१—कन्या-शिक्षा-सोपान—कोमलमति कन्याओंकी धर्मशिक्षा के लिये। मूल्य ‑)

२—महिला-प्रश्नोत्तरी—इसमें महिलाओंके जानने योग्य सनातनधर्मके गूढ़ विषय वर्णित हैं। मू. ‑)

३—श्रीसप्तशतीगीता—दुर्गाके विषयमें किसी प्रकारकी आशङ्का क्यों न हो, इस ग्रन्थके पाठसे समूल नष्ट हो जायगी। मूल्य पूरे कपड़ेकी जिल्द १), आधे कपड़ेकी जिल्द ॥।)

४—ईशोपनिषद्—अन्वय, मन्त्रार्थ, शाङ्करभाष्य, भाष्यानुवाद और उपनिषद्सुबोधिनी टीका सहित। मूल्य ॥)

५—केनोपनिषद्—(ईशोपनिषद्की तरह) मू० ॥)

६—कठोपनिषद्—(केनोपनिषदोंकी तरह) मू० २)

७—वेदान्तदर्शन—(सम्पूर्ण वेदान्तमीमांसा) मू० ।=)

८—व्यासशुकसंवाद—(देवीभागवतोक्त) मू० ।)

९—सती सदाचार—स्त्री-पाठ्य अपूर्व ग्रन्थ। मू० ॥)

१०—भाभीके पत्र—गृहस्थीका अनोखा चित्र। मू० ॥)

११—कुमारिल भट्ट—शान्तिरसपूर्ण नाटक। मू० १)

१२—भारतवर्षका इतिवृत्त—यही एक भारतवर्षका सच्चा और अपूर्व इतिहास है। मू० २)

१३—सती-चरित्र-चन्द्रिका—४४ सती स्त्रियोंके ओजस्वी जीवनचरित्र। मूल्य २)

१४—प्रार्थना—(भावपूर्ण विविध देवताओंके हिन्दी काव्यमय ध्यान, मूल संस्कृत सहित) मू. =)

१५—पूजा—(बालिकाओंके लिये) मू०)॥

१६—तीर्थ और देवपूजन-रहस्य। मू० -)

—✽—

२—आर्यमहिलापुराणमाला।

१—मार्कण्डेयपुराण--(हिन्दी) 'रहस्योद्घाटिनी' टीका सहित। ३ खण्डोंमें समाप्त। मूल्य प्रतिखण्ड १)

२—देवीभागवत-ज्ञानेश्वरी' टीका सहित। चार खण्डोंमें समाप्त। मूल्य प्रतिखण्ड १।)

३—कल्किपुराण–मूल, और हिन्दी अनुवाद। मू. १॥)

—✽—

३—सूर्योदयपुस्तकमाला (संस्कृत)

१—स्तोत्र-कुसुमाञ्जलि—मूल्य ।)

२—उपदेश-पारिजात—धर्मवक्ता, धर्मोपदेशक, पौराणिक आदिके उपयोगि। मूल्य ॥)

३—पुराणरहस्यम्—मू० १।)

४—भूदेवचरितम्—मू० १॥)

५—संन्यासपद्धतिः—(संन्यासगीता सहित) यह ग्रन्थ सब सम्प्रदायोंके साधु–संन्यासियों और सद्गृहस्थोंके उपयोगी है। मूल्य २)

—०—

४—निगमागमग्रन्थमाला ।

१—धर्मकल्पद्रुम—यह हिन्दुधर्मका विश्वकोष (इन्साइक्लोपीडिया) है और आठ खण्डोंमें समाप्त हुआ है। मूल्य द्वितीय और षष्ठ खण्डका—प्रतिखण्ड १॥), शेष छहों खण्डोंका—प्रतिखण्ड २)

२—नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत—(द्वितीय संस्करण) भारतका प्राचीन गौरव और आर्यजातिका महत्त्व जाननेके लिये यह एक ही पुस्तक है। मू० १)

३—प्रवीण दृष्टिमें नवीन भारत—(दो खण्ड) इसमें आर्यजातिका आदिवासस्थान, उन्नतिका आदर्श, शिक्षादर्श, आर्यजीवन, वर्णधर्म आदि विषय वैज्ञानिक युक्ति तथा शास्त्रीय प्रमाणोंके साथ वर्णित हैं। प्रत्येकका मूल्य २)

४—आर्यगौरव—आर्यजातिका जगद्गुरुत्व इसमें देखिये। मूल्य ॥)

५—धर्मविज्ञान—हिन्दूधर्मके सम्पूर्ण ज्ञानलाभके लिये यह एक ही पुस्तक यथेष्ट है। पृष्ठ संख्या ९२५, मूल्य सजिल्द ४), बिना जिल्द ३॥)

६—आचारचन्द्रिका—यह स्कूलपाठ्य सदाचार-सम्बन्धी धर्मपुस्तक है। मू० ॥)

७—नीतिचन्द्रिका—बालकोंके लिये। मू. ॥)

८—गीतार्थचन्द्रिका—इसमें ज्ञान, कर्म और उपासना, तीनोंका सामञ्जस्य किया गया है। मूल्य २॥)

९—व्रतोत्सवचन्द्रिका—इसमें सब हिन्दु-त्यौहारोंका शास्त्रीय विवेचन है। मू० ३)

१०—सुगम-साधन-चन्द्रिका—मूल्य =)

११—चरित्रचन्द्रिका—पौराणिक, ऐतिहासिक और आधुनिक महापुरुषोंके चरित्रोंका संग्रह। प्रथम भागका मू० १) दूसरे भागका १।)

१२—नित्यकर्मचन्द्रिका—मूल्य ।)

१३—साधनचन्द्रिका—चारों योगोंका संक्षेपमें अति सुन्दर वर्णन। मू० १॥।)

१४—शास्त्रचन्द्रिका—पारलौकिक विद्यासम्बन्धी उत्तम ग्रन्थ। मूल्य १॥)

१५—धर्मचन्द्रिका—एन्ट्रेस क्लासके बालकोंके पठनोपयोगी। मू० १)

१६—योगदर्शन—(हिन्दीभाष्यसहित) मूल्य २)

१७—दैवीमीमांसादर्शन (प्रथम भाग) मू० १॥)

१८—कर्ममीमांसादर्शन (दो भाग) मू० १॥), २)

१९—ब्रह्मचर्यसोपान—मू० ।)

२०—राजशिक्षासोपान—मू० =)

२१—धर्मसोपान—मू० ।)

२२—सदाचारसोपान—मूल्य -)

२३—साधनसोपान—मू० ।)

२४—शास्त्रसोपान—मूल्य ।)

२५—धर्मप्रचारसोपान—मू० ।)

२६—महामण्डलरहस्य अथवा जातीय महायज्ञसाधन—मू० १।)

२७—चतुर्दशलोकरहस्य—मू० ।)

२८—परलोकरहस्य—मू० ।)

२९—पारिवारिकप्रबन्ध—मू० १)

३०—आचारप्रबन्ध—मू० १)

३१—मन्त्रयोगसंहिता-भाषानुवादसहित । मू० १)

३२—हठयोगसंहिता—भाषानुवादसहित । मू० ॥।)

३३—गो-व्रत-तीर्थ-महिमा—मू० ॥)

३४—गो-रक्षा—मू० ।≈)

३५—संगीतसुधाकर—भजनसंग्रह । मू० ।≈)

३६—धर्मसुधाकर—अपूर्व धर्मग्रन्थ । मू० २)

३७—धर्मकर्म दीपिका—मू० ॥)

३८—सनातनधर्मदीपिका—मू० ॥।)

३९—भगवद्गीता (प्रथम खण्ड) प्रत्येक श्लोकका त्रिविध अर्थ और सब प्रकारके अधिकारियोंके समझने योग्य विज्ञान । मूल्य १)

४०—रामगीता—(सचित्र) श्रीमहर्षि वशिष्ठकृत श्रीरामगीताका मूल और वैज्ञानिक टिप्पणी सहित अनुवाद । मूल्य २॥)

४१—धीशगीता—सचित्र, सानुवाद । मू० ॥।)

४२—शक्तिगीता— „ „ मू० १)

४३—शम्भुगीता—सचित्र, सानुवाद। मू० १)
४४—सूर्यगीता— „ „ मू० ॥)
४५—विष्णुगीता— „ „ मू० १)
४६—संन्यासगीता—सानुवाद मू० १)
४७—गुरुगीता— „ मू० ।)
४८-धर्मप्रश्नोत्तरी-सनातनधर्मके संक्षिप्त सिद्धान्त। मू०।)

४९—तत्त्वबोध—भाषानुवाद और वैज्ञानिक टिप्पणी सहित। मूल्य =)

५०—कहावतरत्नाकर—न्यायावली और सुभाषितावली सहित। रायल संस्करण १०),साधारण संस्करण ७)

५१—तुलसीकृत रामायण—वैज्ञानिक टिप्पणी सहित। मूल्य १॥)

५२—श्रीमधुसूदनसंहिता—मूल और संस्कृत टीका सहित स्मृतिग्रन्थ। मू० १॥)

५—धर्मप्रचारक पुस्तकमाला (बंगला)

१—जातीय महायज्ञ १।)
२—दैवीमीमांसादर्शन१॥।)
३—गुरुगीता ।)
४—तत्त्वबोध ।)
५—साधनसोपान =)
६—सदाचारसोपान -)
७—कन्याशिक्षासोपान -)
८—योगदर्शन २)
९—भक्तितत्त्व १)
१०—महर्षि चरित १)
११—अगस्त्य चरित ॥)
१२—सांख्यरहस्य ॥।)
१३—योगरहस्य ॥=)
१४—वैशेषिकरहस्य॥।)

१५—शक्तिगीता	१)	२२—न्यायरहस्य	॥)
१६—शम्भुगीता	१)	२३—हितोपदेश	२)
१७—पुराणतत्त्व	१)	२४—नारीधर्म	१)
१८—धर्मतत्त्व	।=)	२५—सदाचारशिक्षा	।=)
१९—जन्मान्तरतत्त्व	।॥)	२६—नीतिशिक्षा	॥)
२०—साधनतत्त्व	१)	२७—अवतारतत्त्व	२)
२१—आर्यजाति	१)	२८—तुलसीरामायण	४)

---

6. Mahamandal Series.

1—The world's Eternal Religion
Ordinary Edn. Rs 3/- Royal Edn. Rs 5/-
2—Srimat Bhagavat Gita As -/6/-
3—India's Eternal Religion As.-/8/-
4—India—
The Pioneer of World Civilization As.-/8/-
5—Lord Budbha Rs 2/4/-
6—Meghnad Badh Rs. 2/-
7—How to write English Correctly Rs. 1/4/-
8—Hand Book of English Synonyms Rs. 1/12/-

७—श्रीमहामण्डलपुस्तिकामाला ।

इस पुस्तिकामालाकी पुस्तिकाएँ विनामूल्य बांटी जाती हैं । लगभग १०० पुस्तिकाएँ अबतक निकल चुकी हैं ।

आर्यमहिला।

सनातनधर्मावलम्बिनी आर्यमहिलाओंकी यह सचित्र मासिकपत्रिका आर्यमहिलाहितकारिणी महापरिषद्‌की सभ्याओंको बिना मूल्य मिलती है।

सूर्योदय।

यह संस्कृत भाषाका अद्वितीय पत्र है। अखिल भारतवर्षीय धार्मिकाध्यात्मिकसंस्कृतविश्वविद्यालयके मुखपत्ररूपसे प्रकाशित होकर उसके सभ्योंको बिना मूल्य प्राप्त होता है।

सब प्रकारकी पुस्तकें मिलनेका और पत्र-
व्यवहारका पता—

मैनेजर—
शास्त्रप्रकाशनविभाग, महामंडल भवन,
जगत्‌गंज, बनारस।